Indian J. Soc. & Pol. 06 (02):93-94 :2019 **ISSN: 2348-0084(P)**
ISSN: 2455-2127(O)

नाना जी देशमुख : व्यक्तित्व, कृतित्व और उनके विचारों की प्रासंगिकता

दर्शना[1]
[1]अध्यक्ष, राजनीति शास्त्र, बी0आर0डी0बी0डी0पी0जी0 कालेज आश्रम, बरहज, देवरिया (उ0प्र0), भारत

ABSTRACT

वर्तमान समय में राजनीति साख का संकट है। राजनीति मूल्य विहीन होती जा रही है। राजनीति लोगों के लिए एक लाभदायक उद्योग बनता जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन बढ़ता जा रहा है। गाँव रोजगार और युवाश्रम की अनुपलब्धता के संकट से जूझ रहे है। कहीं बाढ़ कहीं सूखा की स्थिति है। शहरों पर अनावश्यक बोझ बढ़ता जा रहा है। न्यायालयों में मुकदमों की बाढ़ सी आ गयी है। ऐसे में आज राष्ट्रऋषि नाना जी देशमुख के विचार सर्वाधिक प्रासंगिक हैं।

KEYWORDS: *नानाजी देशमुख, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, जनसंघ, अधिवर्षता*

नाना जी देशमुख का पूरा नाम चंडिकादास अमृत राव देशमुख था। उनका जन्म 11 अक्टूबर 1916 को कस्बा कदोली, जिला–हिंगोली महाराष्ट्र में हुआ था। उनका जीवन संघर्षों में बीता। बहुत छोटी उम्र में ही उन्होंने अपने माता–पिता को खो दिया। मामा ने उनका पालन–पोषण किया उनके पास शुल्क देने और पुस्तकें खरीदने तक के लिए पैसे नही थे। गरीबी अभाव नही एक चुनौती है नाना जी ने इसे सिद्ध करके दिखाया। उन्होंने शिक्षा और ज्ञान प्राप्ति के लिए सब्जी बेचकर पैसे जुटाये। वे मंदिरों में रहे और पिलानी के विरला इंस्टीटयूट से उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की। बाद में उन्नीस सौ तीस के दशक में वे आर.एस.एस. में शामिल हो गये भले ही उनका जन्म महाराष्ट्र में हुआ लेकिन उनका कार्यक्षेत्र राजस्थान और उत्तर प्रदेश ही रहा।[3] नाना जी देशमुख जब नौवीं कक्षा के विद्यार्थी थे उसी समय उनकी मुलाकात संघ के संस्थापक डा0 हेडेगवार से हुई वे पढ़ाई के साथ–साथ निरन्तर संघ के कार्यों में लगे रहे सन् 1940 में उन्होंने नागपुर से संघ शिक्षा वर्ग का प्रथम वर्ष पूरा किया उसी साल डाक्टर साहब का निधन हो गया। फिर बाबा साहब आप्टे के निर्देशन पर नाना जी आगरा में संघ का कार्य देखने लगे।

उसी साल पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी एम0 ए0 की पढ़ाई करने के लिए आगरा आये नाना जी से कहा गया कि अब यहाँ का काम उपाध्याय जी देखेंगे। आप गोरखपुर जाइये। सन् 1940 में संघ की पहली शाखा प्रारम्भ हुई। उनके कार्य की प्रगति को देखते हुए उन्हें गोरखपुर विभाग को सम्भालने की जिम्मेदारी सौंपी गई उनके अथक परिश्रम का परिणाम था कि 1944 तक गोरखपुर के देहातों में 250 शाखाएं लगने लगी थी। संघ के पास दैनिक खर्च के लिए पैसे नही होते थे। नाना जी को धर्मशालाओं में ठहरना पड़ता था जहाँ उन्हें तीन दिन से अधिक ठहरने नही दिया जाता इसके लिए नाना जी देशमुख ने बाबा राघव दास का बावर्ची बनना स्वीकार किया।

सन् 1944 में राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के द्वितीय सर संघ चालक गुरूजी गोरखपुर प्रवास पर आये नाना जी के कार्यो को देखकर वे बहुत खुश हुए उन्होंने गोण्डा से बलिया तक के सभी जिलों का कार्यभार दे दिया उन्हें विभाग प्रचारक का कार्यभार सौंपा गया। सन् 1951 में उन्हें पंडित दीन दयाल के साथ भारतीय जन संघ का कार्य करने को कहा गया। राजनीति में संघर्ष नहीं समन्वय, सत्ता नहीं अंतिम व्यक्ति की सेवा आदि वाक्यों को नाना जी ने स्थापित करने की कोशिश की।[4]

श्री गुरूजी ने नाना जी को उत्तर प्रदेश में भारतीय जन संघ के महासचिव का प्रभार लेने को कहा। नाना जी के जमीनी कार्य ने उत्तर प्रदेश में जन संघ को स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई। 1957 तक जन संघ ने उत्तर प्रदेश के सभी जिलों अपनी इकाइयां खड़ी कर ली। नाना जी ने पूरे उत्तर प्रदेश का दौरा किया जिसके परिणाम स्वरूप जल्द ही भारतीय जन संघ उत्तर प्रदेश की प्रमुख राजनीतिक शक्ति बन गया।

उत्तर प्रदेश की बड़ी राजनीतिक हस्ती चन्द्रभान गुप्त को नाना जी के वजह से तीन बार कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा। नाना जी देशमुख का डॉ0 राममनोहर लोहिया से भी अच्छे समबन्ध थे एक बार उन्होंने डाक्टर लोहिया को भारतीय जन संघ कार्यकर्ता सम्मेलन में बुलाया जहाँ लोहिया की मुलाकात दीन दयाल उपाध्याय से हुई दोनों के जुड़ाव से भारतीय जनसंघ समाजवादियों के करीब आ गया इसने भारतीय राजनीति की दशा और दिशा बदल दी। सन् 1967 में जनसंघ संयुक्त विधायक दल का हिस्सा बन गया और चौधरी चरण सिंह के नेतृत्व में सरकार में शामिल भी हुआ। नाना जी के चौधरी चरण सिंह और डॉ0 राम मनोहर लोहिया दोनों से ही अच्छे सम्बन्ध थे इसलिए उन्होंने गठबंधन निभाने में अहम भूमिका निभाई। उत्तर प्रदेश की पहली गैर कांग्रेसी सरकार के गठन में विभिन्न राजनीतिक दलों को एकजुट करने में नाना जी का योगदान अद्भुत था।

नाना जी विनोबा भावे के भूदान आन्दोलन में सक्रिय रूप से शामिल हुए वे दो महीने तक उनके साथ रहे। जे0पी0 आन्दोलन में जब पुलिस ने जयप्रकाश नारायण पर लाठियां बरसाई तो नाना जी ने उन्हें सुरक्षित निकाल लिया। जे0पी0 को बचाने में नाना जी का एक हाथ टूट गया था। जे0पी0 के आह्वान पर उन्होंने 'सम्पूर्ण क्रान्ति' को पूरा समर्थन दिया। जनता पार्टी के संस्थापकों में नाना जी प्रमुख थे। कांग्रेस को सत्ताच्युत करके जनता पार्टी सत्ता में आई। नाना जी

1: Corresponding Author

बलरामपुर सीट से चुने गये। मोरार जी देसाई ने उन्हे मंत्रिमण्डल में शामिल होने का न्योता दिया परन्तु नाना जी ने अस्वीकार कर दिया।[5]

नाना जी देशमुख को यह श्रेय जाता है कि उन्होंने इस विचारधारा का प्रतिपादन किया कि राजनीति में अवकाश ग्रहण करने की कोई 'उम्र सीमा' होनी चाहिए सन् 1980 में साठ वर्ष की उम्र में उन्होंने सक्रिय राजनीति से सन्यास ले लिया परन्तु सामाजिक और रचनात्मक कार्यों से नहीं।

इस प्रकार नाना जी देशमुख ने राजनीति में उच्च प्रतिमान स्थापित किया और उन्होंने अद्वितीय सागंठनिक क्षमता का परिचय दिया। नाना जी ने देश की सेवा एक अर्थ शास्त्री, समाज शास्त्री तथा शिक्षा विद् के रूप में भी किया। राष्ट्रीय राजनीति के बाद वे समाज के पुनः सचना के कार्य में लग गये। उन्होंने दीन दयाल उपाध्याय के 'एकात्म मानव दर्शन' को व्यवहारिक धरातल पर उतारा उनकी मान्यता थी कि स्वतंत्रता स्वालम्बन के बिना पूर्ण नहीं है और स्वालम्बन के बिना स्वाभिमान सम्भव नहीं है। उनकी मान्यता थी कि व्यक्ति और गाँव स्वालम्बी होने चाहिए। उन्होंने स्वदेशी, स्वालम्बन और विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था का विकास शासन केन्द्रित विकास से नहीं हो सकता इसे व्यक्ति केन्द्रित और समाज केन्द्रित होना पड़ेगा।

'वनवासी राम' को अपना आदर्श मानने वाले नाना जी देशमुख ने इसके लिए कई प्रकल्प स्थापित किये गाँधी जी की तरह उनकी मान्यता थी कि भारत के विकास का रास्ता गाँवों से होकर जाता है। नाना जी ने दीन दयाल शोध संस्थान की स्थापना किया उसके माध्यम से उन्होंने समाज सेवा किया। उन्हें देश का पहला ग्रामीण विश्व विद्यालय स्थापित करने का श्रेय जाता है। उन्होंने चित्रकूट में 'चित्रकूट ग्रामोदय विश्व विद्यालय की स्थापना किया। वे इसके पहले कुलपति थे। नाना जी ने चित्रकूट को अपने सामाजिक कार्यों का केन्द्र बनाया। 'चित्रकूट के जंगलों में पाई जाने वाली जड़ी बूटियाँ की उपयोगिता जन–जन तक पहुँचाने के लिए आरोग्य धाम की स्थापना की गई जहाँ विभिन्न आयुर्वेदिक चिकित्सा और औषधियों का निर्माण होता है। इस आदिवासी बहुल क्षेत्र में नाना जी ने शिक्षा के कई प्रकल्प चलाए। लघु और कूटीर उद्योगों के माध्यम से लोगों को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम ने नाना जी के कार्यों की बहुत ही प्रशंसा किया और दीन दयाल शोध संस्थान को ग्रामीण विकास के प्रारूप को लागू करने वाला अनुपम संस्थान बताया तथा इसे भारत के लिए सर्वाधिक उपयुक्त कहा था।संस्कार युक्त शिक्षा के उद्देश्य से सन् 1950 में उनके मार्गदर्शन में आरम्भ किये गये सरस्वती शिशु मंदिरों की श्रृंखला दिखाई देती है। उनके द्वारा स्थापित दीन दयाल संस्थान विवाद मुक्त समाज की संस्थापना में भी मदद करता है चित्रकूट के पास के अस्सी गाँव मुकदमेंबाजी से मुक्त है।

उन्होंने राष्ट्रधर्म और पांचतय नामक दो साप्ताहिक और स्वदेश (हिन्दी समाचार–पत्र) के प्रबन्ध निदेशक की जिम्मेदारी निभाई। उन्होंने दीन दयाल शोध संस्थापक की ओर से 'मन्थन' नाम की एक पत्रिका भी निकाली। नाना जी का जीवन असंख्य लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत है। यदि उनके विचारों को आगे बढ़ाया जाये और उनके द्वारा दिये गये प्रकल्पों पर ईमानदारी से कार्य किया जाये तो देश और समाज के अनेक समस्याओं का समाधान किया जा सकेगा भारत की सरकार ने उन्हें 2019 में 'भारत रत्न' प्रदान किया। वे सच्चे अर्थों में भारत रत्न ही थे।

टिप्पणीः

1. नाना जी देशमुख को राष्ट्र ऋषि की संज्ञा पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने दिया था।
2. जिस दिन नाना जी देशमुख जन्म हुआ उसी दिन जयप्रकाश नारायण का भी जन्म हुआ और यही महर्षि वाल्मिकी की भी जन्म तिथि है।

REFERENCES

https//hi.m.wipipedia.org

http:www. vbpcp.org/shankhnaad/(नाना जी देशमुख जीवन परिचय)

https//hi.m.wikipedia.org